शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएँ

यीशु कौन है?

अध्याय 5 : यीशु के मित्र व शिष्य

क्या आप कभी उस व्यक्ति से मिले हैं, जिसे आप सराहते और आदर्श के रूप में देखते हैं? यदि हाँ! तो आप याद कर सकते हैं कि आपके लिये यह विश्वास करना कितना मुश्किल होता है कि आप वास्तव में उस व्यक्ति के साथ बातें कर रहे हैं और उन्हें जानने का प्रयास कर रहे हैं। कई बार हमें अचम्भा होता है कि जिस व्यक्ति की हम प्रशंसा करते हैं, वह हम जैसे साधारण लोगों से बात करने के लिये समय निकाल रहा है। हम कभी सोच भी नहीं सकते कि वे हमारे साथ समय बिताना चाहेंगे; हम अपेक्षा भी नहीं कर सकते कि वे हमें अपना मित्र कर के पुकारेंगे।

जितना अधिक हम यीशु के बारे में जानते हैं, उतना ही अधिक हम उसका आदर करने लगते हैं। वह संसार का सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली व्यक्तित्व है। इसके बावजूद भी, वह हम से दूर नहीं रहता। नहीं, बल्कि यीशु ठुकराए हुए लोगों को प्रेम करने आया। वह पापियों को बचाने व उनसे मित्रता करने को आया। यीशु और उसके मिशन के बारे में अधिक जानने के लिये, आईये, उसके सम्बन्धों का अध्ययन करें।

यीशु के समय में बहुत से लोग अपेक्षा करते थे कि वह धनी, शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों से मित्रता करेगा। लेकिन यदि हम यीशु के सम्बन्धों पर ग़ौर करें, तो पाएँगे कि यीशु ने उन सारी अपेक्षाओं के विपरीत जीवन व्यतीत किया।

आप लोगों के साथ समय व्यतीत करके उनकी संगति व उनके जीवन जीने के ढंग को देखकर उनके बारे में बहुत कुछ कह सकते हैं। कई लोग समाज के प्रमुख लोगों के साथ ही अपना समय व्यतीत करना चाहते हैं। कई लोगों का मानना होता है कि अधिक धनी व अधिक शक्तिशाली लोगों से मित्रता करना सभी को पसन्द होता है।

यीशु के समय में बहुत से लोग अपेक्षा करते थे कि वह धनी, शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों से मित्रता करेगा। लेकिन यदि हम यीशु के सम्बन्धों पर ग़ौर करें, तो पाएँगे कि यीशु ने उन सारी अपेक्षाओं के विपरीत जीवन व्यतीत किया। बजाए इसके, उसने अपना समय लाचार, तुच्छ और अप्रिय लोगों के साथ बिताया। उसने उन पर तरस खाया और उन्हें अपना मित्र कहा। समाज में सबसे अधिक निराश व हीन लोगों को यीशु ने खोजा व अपनाया। कुछ उदाहरणों का अध्ययन करने पर हम, यीशु की सच्ची पहचान को लेकर पूर्ण प्रकाशन को प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वप्रथम, हम देखते हैं कि यीशु ने एक स्त्री के साथ समय बिताया। और उसने उस स्त्री का आदर किया। दुर्भाग्य से, इतिहास ने मसीहियत को महिला विरोधी धर्म के रूप में प्रस्तुत किया है। यह विचार सच्चाई से बहुत दूर है! जब हम वचन को ध्यान से पढ़ते हैं; और जब हम स्त्रियों के साथ यीशु की बातचीत को परखते हैं; तब हम पाते हैं कि यीशु ने परमेश्वर के राज्य में स्त्रियों की भूमिका को बहुत आदर व महत्व दिया है। एक बार यीशु को एक फरीसी के घर में भोजन करने के लिये बुलाया गया। इस घटना को कलीसिया के वरिष्ठ पासबान के घर में आमंत्रण पाने पर आदर की बात के रूप में लिया जा सकता है। लेकिन जल्द ही यीशु ने प्रगट कर दिया कि उसके विचार से उस भोज का आदरणीय पात्र कौन है। लूका 7 अध्याय में हम देखते हैं कि एक स्त्री, जिसे सब लोग पापिन स्त्री के नाम से जानते थे, यीशु को देखने के लिये उस फरीसी के घर पहुँच गई। उसने अपने आँसूओं के साथ यीशु के पैरों को धोया। अपने बालों से उसके पैरों को पोंछा, उसके कदमों को चूमा और इसके पश्चात् कीमती इत्र से उसका अभिषेक किया। इस घटना से भयभीत होकर फरीसी सोचने लगा, – "यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है" (लूका 7:39)। यीशु ने फरीसी को डाँटते हुए कहा कि हालाँकि वह एक प्रभावशाली व्यक्ति और एक अधिकारी है, फिर भी, उसने यीशु का योग्य आदर नहीं किया। परन्तु इस साधारण व तुच्छ स्त्री ने उसका आदर किया। उसके बदले में, यीशु ने उसका आदर किया व उसके पापों को क्षमा किया।

यीशु के समय में – बहुत से ऐसे पुरूष भी थे, जिन्हें तुच्छ जाना गया और जिनका अनादर हुआ। और वे लोग भी यीशु के मित्र थे। यीशु के समय में सबसे अधिक घृणित कार्य चुंगी लेने वालों का था। बहुत बार हम, यीशु को चुंगी लेने वालों के साथ भोजन करते हुए, संगति करते हुए और उन्हें अपना चेला तक बनाते हुए देखते हैं! मरकुस 2:15–17 में हम इस प्रकार की एक घटना को देखते हैं, – "और वह उठकर, उसके पीछे हो लिया : और वह उसके घर में भोजन करने बैठे; क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिये थे। और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा; 'वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!'" (मरकुस 2:15–16)।

यीशु इन कुड़कुड़ाने वाले लोगों को उत्तर देते हैं। वे चाहते थे कि यीशु उनके साथ इसलिये समय बिताए, क्योंकि वे अपने आप को समाज में शक्तिशाली और प्रतिष्ठित समझते थे, और यीशु के साथ संगति करने से उनकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगने वाले थे। लेकिन यीशु ने उनको समझाते हुए कहा, – "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है : मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।" (मरकुस 2:17)। यीशु को प्रतिष्ठित दिखने की चिन्ता नहीं थी। वह जमीनी शक्ति व प्रभाव से प्रभावित नहीं था। वह उन लोगों के साथ समय बिताने के लिये आया, जिन्हें उसकी आवश्यकता थी।

अगर हम आवश्यकता की बात करें तो, – तो यीशु ने समाज के सबसे ज़रूरतमन्द अर्थात् बच्चों के साथ समय बिताया। लूका की पुस्तक 18:15–17 में हम देखते हैं, – "फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देखकर उन्हें डाँटा। यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, 'बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो : क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमश्वेर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा।'" उन प्रमुख लोगों को हुए अचम्भे के बारे में कल्पना कर के देखिये, जब उन्हें यह समाचार दिया गया होगा! वे शायद सोचते होंगे कि शक्तिशाली व बुद्धिमान लोगों को परमेश्वर का राज्य प्राप्त होगा। किन्तु यीशु ने कहा कि अगर कोई परमेश्वर के राज्य में आना चाहता है, तो उसे इन बच्चों के समान बनना होगा।

हो सकता है कि आप सोचते हों – 'पता नहीं! यीशु आपके साथ सम्बन्ध बनाना चाहते हैं, या नहीं?' यदि आप ग़रीब, दीन, चोटिल, टूटे ह्रदय के व दुःखी हैं, तो आपको भजन संहिता 34 अध्याय पढ़ने की आवश्यकता

हो सकता है कि आप सोचते हों – पता नहीं! यीशु आपके साथ सम्बन्ध बनाना चाहते हैं, या नहीं? यदि आप ग़रीब, दीन, चोटिल, टूटे ह्रदय के व दुःखी हैं, तो आपको भजन संहिता 34 अध्याय पढ़ने की आवश्यकता है। वहां लिखा है कि वह टूटे मन वालों के समीप रहता है। वह उन्हें छुड़ाता, उन पर दृष्टि रखता व उन्हें मुक्ति प्रदान करता है।

है। वहाँ लिखा है कि वह टूटे मन वालों के समीप रहता है। वह उन्हें छुड़ाता, उन पर दृष्टि रखता व उन्हें मुक्ति प्रदान करता है।

क्या आप स्वयं को इन में से किसी श्रेणी में देखते हैं? क्या आप देख पाते हैं कि यीशु आपको ढूँढ़ने व आपको उद्धार देने के लिये आया है? क्या आप उसके मित्र, व शिष्यों के समान नहीं होना चाहेंगे, कि आएँ और उसका अनुसरण करें?

सुर्खियाँ

- यीशु उन लोगों को अहमियत देते व प्रेम करते थे, जिन्हें समाज तुच्छ जानता था; जिन में स्त्रियाँ, बच्चे व चुंगी लेने वाले शामिल थे।

- यीशु "प्रमुख" व "प्रतिष्ठित" लोगों के साथ समय बिताने नहीं, परन्तु खोए हुओं को उद्धार करने के लिये आए।

- चाहे आप या आप का समाज आपको किसी भी दृष्टिकोण से देखता हो, यदि आप परमेश्वर की ओर फिरना तथा अपनी आवश्यकताओं को उसे बताना चाहते हैं? तो परमेश्वर आपके साथ अपना सम्बन्ध बनाना चाहते हैं।

अब आप बताएँ

- "यीशु कौन है?" अध्ययन के दौरान, आपके मन में यीशु के प्रति बहुत आदर व प्रशंसा उत्पन्न हुई होगी? क्या आपके मन में अभी भी यह प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में इतना प्रतिष्ठित जन आपके साथ समय बिताएगा? क्या यह अध्याय आपको उसकी मित्रता स्वीकार करने में सहायता करता है?

- यदि सच में, यीशु ही मसीह है, और वास्तव में वह आपसे सम्बन्ध बनाना चाहता है, तो कौन सी बात आपको उसकी ओर दौड़ने से रोक सकती है? सच्चे परमेश्वर से मित्रता के बारे में विचार कर के देखें।

- समय निकाल कर प्रार्थना करें व परमेश्वर को बताएँ कि आपको उसकी कितनी आवश्यकता है। और आप उसके कितने आभारी हैं, क्योंकि उसने समाज में आपकी स्थिति पर ध्यान न देते हुए, आप से प्रेम किया, और उसका अनुसरण करने के लिये वह आपको आमंत्रित करता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing